बीसवीं शताब्दी का स्त्री लेखन

हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

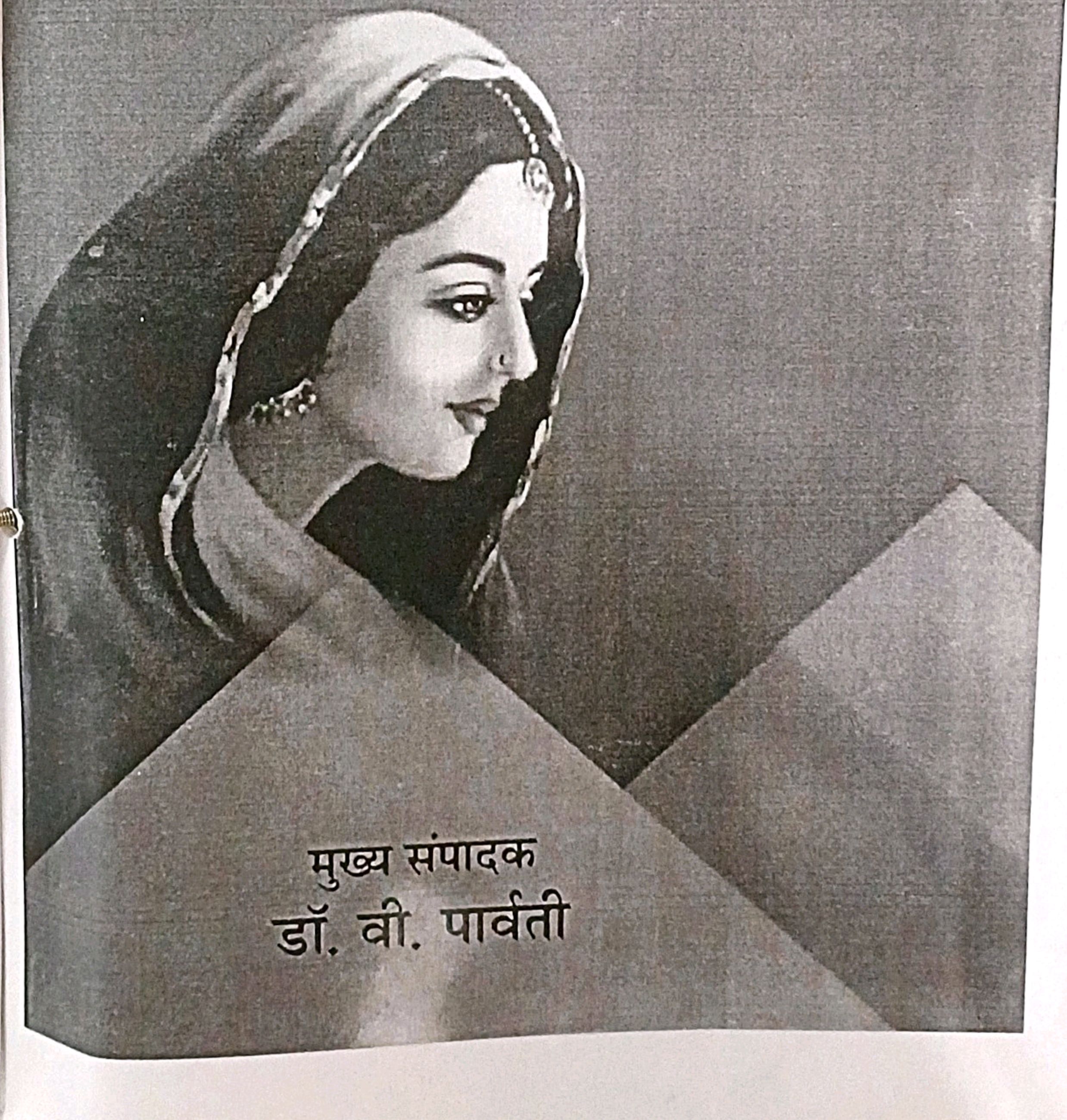

मुख्य संपादक
डॉ. वी. पार्वती

ISBN : 978-93-94138-06-3

पुस्तक : बीसवीं शताब्दी का स्त्री लेखन : हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के संदर्भ में
मुख्य संपादक : डॉ. वी. पार्वती
सह-संपादक : डॉ. मोहम्मद जमील अहमद, डॉ. जी. प्रवीणा बाई
डॉ. सय्यद ताहेर, अशोक चवान
प्रकाशक : **शैलजा प्रकाशन**
57 पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर-208011 (उ.प्र.)
मो. 8765061708, 9451022125
Email : shailjaprakashan@gmail.com
संस्करण : प्रथम, 2022
मूल्य : 1095/-
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर

48. स्त्री-कौमार्य अथवा यौन शुचिता के प्रश्न
डॉ. जि. एन जगन 245
49. हिंदी कहानी के विकास में महिला कहानीकारों का योगदान
गुलाम मुस्तफा 248
50. रजनी तिलक की कविताओं में प्रस्तावित बहुजन चेतना
प्रकाश 251
51. 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में स्त्री-जीवन
संजय कुमार चौव्हान 253
52. चित्रा मुद्गल की कहानी में स्त्री विमर्श
डॉ. संतोषी 258
53. बीसवीं शताब्दी के कन्नड़ साहित्य में स्त्री
डॉ. आर सपना 260
54. डॉ. कुसुमकुमार : पवन चतुर्वेदी की डायरी
डॉ. एल विजय लक्ष्मी 263
55. 20वीं सदी के तमिल महिला साहित्यकार शिवशंकरी
डॉ. पूर्णिमा 265
56. प्रभाखेतान के उपन्यासों में चित्रित स्त्री जीवन के विविध आयाम
डॉ. जी एच नीता 271
57. मैत्रेयी पुष्पा एवं के. आर. मीरा के उपन्यासों में स्त्री
Arya Krishnan P P 277
58. समकालीन स्त्री उपन्यास लेखन में स्त्री जीवन की त्रासदी
डॉ. सीताराम राठौड़ 282
59. महादेवी वर्मा के कहानियों में से सबिया का जीवन
यस के फौज़िया 286
60. मलयालम लेखिका माधवी कुट्टी की कहानी 'पलायनम्' में अभिव्यक्त स्त्री
जिसना 288
61. 20वी सदी के महिला कथा साहित्य में नारी विमर्श
RAMAVAT LALSING 292
62. निर्मला जैन की आत्मकथा 'ज़माने में हम' में चित्रित यथार्थ
पार्वती भगवानराव देशपांडे 297
63. डॉ. अहिल्यामिश्र के कहानियों में नारी अस्तित्व
कोडगावे किशन 303
64. मलयालम कवियित्री सुगतकुमारी की कविताओं में पारिस्थितिक स्त्रीवाद
निहाला वी.पि 307

55

20वीं सदी के तमिल महिला साहित्यकार शिवशंकरी

डॉ. पूर्णिमा

80वीं दशक आधुनिक तमिल साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। लक्ष्मी, शिवशंकरी, अनुराधा रमणन, इंदुमती, वासंदी, रमणी चंद्रन, आदि अनेक महिला लेखिकाओं का बोलबाला था। इन लेखिकाओं का प्रभाव समाज पर पड़ा। तमिल साहित्य के सुप्रसिद्ध महिला साहित्यकारों में शिवशंकरी का नाम अद्वितीय है। आपका जन्म 14 अक्टूबर 1942 में चेन्नई में हुआ। राज्य लक्ष्मी–सूर्यनारायणन इनके माता–पिता हैं। चेन्नई में इनकी शिक्षा दीक्षा हुई। इनकी शादी 1963 में श्री चंद्रशेखरन से हुई।

इन की प्रथम रचना 'अवरगल सिरिकट्टूम' नामक लघु कथा है। इसमें निसंतान दंपत्ति की मानसिक स्थिति, मनो वेदनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण प्राप्त है। तमिल पत्रिका 'कलकी' में इनका प्रकाशन 1968 में हुआ। तत्पश्चात विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई स सामाजिक चेतना, पारिवारिक संघर्ष, नारी चेतना, नारी शोषण, नारी उत्पीड़न, नारी सशक्तिकरण, पर इनकी लगभग सभी रचनाएं आधारित है। उनकी रचनाएं पाठकों के हदय एवं स्मृति पटल में अमिट छाप छोड़ देती है।वेअपनी लेखनी से पाठकों को बांधने में अत्याधिक समर्थ साहित्यकार हैं। मध्यवर्गीय परिवार की मानवीय संवेदना के साथ-साथ नारी मन के सूक्ष्म तत्वों को रेखांकित करने में आप अप्रतिम है। इनके उपन्यास 'अवन' नशे की लत पर आधारित है, जो अत्यधिक लोकप्रिय है।

इनकी रचना 'उनक्कु तेरियुमा?'पियक्कड़ की जिंदगी पर प्रकाश डालती है।1980 में आनंद विघटन पत्रिका में 'ध्रु मनिदनिन कदै' नामक श्रृंखला, नशे से होने वाले विघटन तथा इनके पुनरुद्धार के बारे में लिखी गई है। किस प्रकार एक पत्नी, झूठी इज्जत के कारण अपने पती को पियक्कड़ बनाकर अपने पति का काल बन जाती है, इसका सजीव चित्रण हमें प्राप्त होता है।

1993 में उनके द्वारा स्थापित Knit India Through Literature के अंतर्गत भारत के मान्यता प्राप्त 18 भारतीय भाषाओंकीविभिन्न पीढ़ियो के साहित्यकारों के साक्षात्कार एवं उनकी एक रचना का अनुवाद प्रकाशित किया। इसका प्रकाशन दिनामणि कदिर तमिल पत्रिका में हुआ।

आपके आत्मविश्वास के पुस्तक "सिरु नूल कंडा नम्मै सिरै पडुत्त्वदु?" प्रख्यात है।

आपने मालन नामक लेखक के साथ Awakened Groups for National Integration नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए सहायता प्राप्त हो रही है। तमिलनाडु में नेत्रदान के जागरण में आपका योगदान अद्वितीय है।

आप आधुनिक तमिल साहित्य के तीसरी पीढ़ी की लेखिका है। प्रथम पीढ़ी के वाई.कोदई नायकी, दूसरी पीढ़ी के और.चूड़ामणि, के बाद तमिल रचनाओं में स्त्री के बाह्य संसार, कामकाजी औरतों की समस्या, उनके अस्तित्व, उनकी बदलती मन स्थिति,और बदलते रिश्ते का चित्रण इन्होंने अपनी रचनाओं में खींचा है।

सहज, सरल, सरस, बोधगम्य, प्रवाहमय, प्रभावशाली भाषा आपकी विशेष पहचान है। तीन पीढ़ियों के अनुभवों का संग्रह इनकी रचनाओं में प्राप्त होती है। पात्रों के अनुकूल देसी, तत्सम, तद्भव, विदेशी शब्दों का सहज प्रयोग करने मेंआप माहिर हैं। उनकी रचनाओं में तत्काल समाज में व्याप्त सामाजिक मूल्यों के विघटनका यथावत रूप प्राप्त होता है।

आप महिला जगत के अत्यधिक लोकप्रिय लेखिका है। इन्होंने गद्य साहित्य की किसी भी विधा को अछूता नहीं छोड़ा। 150 लघु कथाएं 48 लघु उपन्यास 86 उपन्यास 15 यात्रा वृतांत तीन आत्मकथा 3 साक्षात्कार की श्रृंखला,बच्चों के लिए 1 मौखिक पुस्तक "अम्मा सुन्न कदैगल" , एक जीवनी, जया वाशी, साईं चरित्र दर्शन तथा स्वामी विशुद्धानंद के भाषणों का अनुवाद आपकी देन है।

शिवशंकरी के उपन्यास '47 नाटकल' का सामान्य परिचय : विलायत कामोह भारत वासियों में सदियों से प्राप्त है। विभिन्न राजा महाराजाओं के आक्रमण का मूल कारण भी यही है। ऐसे में सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में इसका प्रभाव प्रबल मात्रा में प्राप्त होना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इस उपन्यासकी कथा वस्तु इसमोह पर आधारित है।

उपन्यास का संक्षिप्त सारः उपन्यास का नायक कुमार एक आर्किटेक्ट है। अमेरिकी जीवन केमोह में पडकर किस प्रकार वह दो स्त्रियों के जीवन में खेलता है, इसका वर्णन हमें यहां प्राप्त है। उपन्यास की प्रथम नायिका कुमार की प्रथम पत्नी डॉक्टर लूसी, विदेशी है। कुमार के प्रेम पूर्ण व्यवहार में अपने को खोकर उनसे शादी करती है। दूसरी पत्नी विशाली, मध्यवर्गीय तमिल ब्राह्मण परिवार की है। तत्काल समाज में व्याप्त रीति के अनुसार,विशाली के 16 उम्र में उनकी शादी विलायत वर कुमार से होती है। विशाली छठी कक्षा तक शिक्षित, एक नादानी, सरल, सुंदर, महिला है। शादी के बाद कुमार अपनी पत्नी विशाली को अपनी

बहन कहकर अमेरिका ले जाता है। मासूम, नादानी बिचारी विशाली को तमिल के सिवाय कोई अन्य भाषा नहीं मालूम है। नायक कुमार इसी का नाजायज फायदा उठा कर उनसे निर्मम अत्याचार करता है। शादी के 47वां दिन विशाली अपने पति के अत्याचारों से किस प्रकार मुक्त होकर वापस स्वदेश लौटती है, इसका मर्मस्पर्शी चित्रण हमें यहां प्राप्त होता है।

विलायती दामाद का मोह : उक्त उपन्यास सन 1978 में लिखा गया है। लेकिन इसकी कथावस्तु आज भी प्रासंगिक है। सामान्य मध्यवर्गीय, अर्ध शिक्षित विशाली की मां, बहन ज्ञानम, बड़े भाई चंद्रू, उनके रिश्तेदार, आदि सभी विलायत वर कुमार से प्रभावित होकर वैशाली के साथ उनकी शादी तय कर देते हैं। इसका मुख्य कारण लड़का अमेरिका में है तो बेटी दुनिया की किसी भी सुख सुविधा से वंचित नहीं रहेगी। आज भी लड़की वाले विलायत वर के नाम सुनने मात्र से ही बिना पूछताछ करके अपने बच्चों के जीवन को दांव में लगाने के लिए तत्पर है।आज मां–बाप अपने बच्चोंको विलायत जाने के लिए अनुकूल डिग्रियोंकी शिक्षा देने के लिए लालायित हैं।

दूसरा कारण, महजविलायत कहने से, अपने गांव व समूह में उक्त परिवार की इज्जत बढ़ जाएगी।

तीसरा कारण, सास, ससुर, बहनोई, ननंद, जैसे झगड़ालू रिश्तेदारों से मुक्ति। चौथा कारण, नायक कुमार के अनुसार सिंपल शादी होने के कारण पैसों की बचत। पांचवा कारण, नायक कुमार के माता–पिता एवं नायिका विशाली के परिवार की आर्थिक स्थिति में संभावित प्रगति।

उक्त कारणों के जाल में फस कर अयोग्य वर कुमार को सुयोग्य मानकर अपनी बेटी की शादी कुमार से करते हैं । कुमार के प्रथम पत्नी डॉ लूसी मां बनने वाली है। लेकिन कुमार के मां–बाप को इस शादी के बारे में जरा सी जानकारी भी नहीं होती है। कुमार डॉक्टर लूसी के पैसों को हड़पने के लिए उनसे प्रेम का नाटक रच कर उसमें विजय भी हासिल करता है। कुमार अपने मां बाप के दबाव में आर शादी करने के लिए स्वदेश आता है। मनही मन यही सोचता है कि यदि कम उम्र की अशिक्षित सुंदर ग्रामीण लड़की मिल जाए तो वह घरेलू काम एवं लूसी के बच्चे की देखभाल के लिए काम आएगी। मेरी शारीरिक भूख भी मिट जाएगी। यदि ऐसी नहीं मिली तो बिना शादी के वापस अमेरिका लौट जाए। कुमार शिक्षित सुंदर कन्याओं को छोड़कर अर्थ शिक्षित, नादानी, ग्रामीण, सुंदरीविशाली से शादी करना चाहता है। क्योंकि वह बेसहारा मजबूरन ग्रामीण कम उम्र वाली स्त्री पर अधिकार आसानी से जमा सकता है। यदि उन्हें कल मेरे प्रथम वैवाहिक जीवन की जानकारी होने पर भी वह कुछ नहीं कर पाएगी। कुमार सोचता है कि विशाली को तमिल के सिवाय और कोई भाषा मालूम नहीं होने के कारण वह अपनी दुख दुविधा को किसी से भी नहीं बांट सकती है। उनकी सहायता करने

वाले यहां पर कोई नही है। कुमार ग्रामीण लड़कियों के बारे में यही सोचता है कि, तब "यदि ज्यादा हठ करेगी तो उन्हें डांट कर एक कोने में रहने के लिए कहेंगे तो वे चुपचाप मुख बंद कर मान जाएगी वैसी लड़कियों के लिए तो पति परमेश्वर होता है चाहे वह लाख अत्याचार क्यों न करें या जिंदगी भर क्यों न सताए।" कुमार के शब्दों में"नम्मूर ग्रामतु पेणगले, छी नाए किड "पोलन्याय इरुप्पांग।"1 पृ.सं.77

विशाली16 बरस की है। नायक कुमार उनसे 12 साल बड़े हैं। यहां विशाली, कुमार की तुलना में सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक स्थिति में ही नहीं वरन शारीरिक रूप में भी दुर्बल है। अतः विशाली अपने पति के अत्याचारों को एकओरचुपचाप सहनती है तो दूसरी ओर उन से छुटकारा पाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

आर्थिक लोभ : पैसा इस दुनिया को चलाने वाली सर्वशक्तिमान एवं सशक्तकड़ी है। चाहे रंक हो या राजा, निम्न वर्ग हो या रईस, सभी पैसे के पीछे किसी न किसी रूप में सदा सर्वदा भागते रहते हैं। तमिल में एक कहावत है 'पणम निला वितान पिणम', अर्थ 'बिना पैसा हमारी मांपनाशव के बराबर है।' पैसा है तो सब कुछ है। इस रहस्य को सभी जानते हैं। इसीलिए नायक कुमार विशाली के घरवालों से कहता है कि सिंपल शादी, बिना दहेज, अपने होने वाली विशाली के लिए कँफसेट्ट हीरे की गहने तथा चार रेशमी साड़ी देता है। ताकि ऐसे बर्ताव से प्रभावित होकर लड़की वाले कुमार के बारे में अधिक पूछताछ ना करें। कुमार व उनके घर वालों के बारे में विशाली की मां किसी को ऐसे कहती है"मापिल्लै कण्णुक्कु मन्मदन तान। वरलक्ष्मी ""ओरु दम्बडि वांगविल्लय" 4 गेट्टिक्क पट्टुपुडवैगल"पृ.सं.67

शादी के बाद जब कुमार विशाली और विशाली के बड़े भाई चंदत्त को लेकर चेन्नई आता है, तो लाख मना करने पर भी कुमार वहां ठहरने के लिए रिश्तेदार के घर न जाकर स्टार होटल में रूम बुक करता है। तब चंद्रू से कुमार कहता है, "चेंदुक्कु संबादिक्कोम? सेलवलिक्कत्ताने?"पृ.सं.33, माने, "खर्च करने के लिए ही हम कमाते हैं, तो खर्च करने में क्या हर्ज?"

मतलबी कुमारलूसी के पैसों के लिए ही उनसे शादी करता है। शादी की बात ही अपने मां–बाप से ही छीपाता है। अति सर्वत्र वर्जितहै। चाहे पैसा हो या प्यार, स्वतंत्रता हो या स्वाभिमान,सर्वत्रअति का दुष्परिणाम पाया जाता है। कुमार के विलास, उन्हें लोभी, अत्याचारी व मूल्य हीन व्यक्ति बना देता है। पैसों के कारण ही वह अपनी पत्नी विशाली को बहन बनाकर विलायत ले जाता है।

जब कुमार के मां–बापशादी के लिए, विशाली से भी बेहतर शिक्षित कन्याओं की जानकारी देते हैं, तब कुमार कहता हैकि मुझे वैशाली ही पसंद आई। शादी करके "पत्नी को साथ ले जाने पर कंपनी में तनख्वाह बढ़ाएंगे। तो मैं

आपको हर महीने +50 के बदले +100 भेजूंगा।"1 पृ.सं.21 ("पोण्डाट्टियुडन पोयविट्टाल"" 100 राय अनुप्परेन।) पैसे का नाम सुनकर कुमार के मां–बाप चुप हो जाते हैं।रईस बनने के लिए कुमार अपने से 8 साल बड़ी डॉक्टर लूसी से शादी करता है। अपने एशऔआराम बरकरार रखने के लिए ही कुमार अपनी गलती को गलती न मानता है। जब विशाली को पता चला कि डॉक्टर लूसी कुमार की पहली पत्नी है, तोविशालीसे कुमार कहता है 'सुकून जिंदगी के लिए पैसे ।वह लूसी के पास ।उसे भुगतना है तो अडजेस्ट करने में क्या गलती है?'1 पृसं.130 ('वालक्कै निम्मदिया इरुक्कणुम्नअ"' अनुसरिच्चु पोना एन्न तप्पु?")

विशाली को सच्चाई मालूम होने के बाद कुमार से कहती है, "मैं दूसरी पत्नी बनकर यहां नहीं रहना चाहती हूं । मुझे घर भेज दीजिए।" पृ.सं.129 (नान उंगलुक्कु"'यन्नै अनुप्पिडुंगो")

विशाली की बातों से कुमारनाराज होता है। अपने गलत निर्णय पर अडिग रहकर विशाली को मनाता है," तुम्हें यहां किस चीज की कमी है ? क्या हमारे देश में दो बीवियां नहीं होती? क्या मैं तुमसे प्रेम नहीं करता हूं? छोटी सी बात के लिए गुस्सा क्यों?"पृ.सं.129 (" उनक्कु इंगअ एन्नअ कुरै?""इव्वलवु आत्तिरअ पडरिए?")

पैसे के लिए मानव क्या कुछ नहीं करता? आज भी ऐसे अनेक उदाहरण हमारे समाज में व्याप्त है। विदेशी वर से शादी होकर अपनी बेटी का हाल–चाल भी नहीं मालूम होताहै। विलायती दामाद अपनी पत्नी को नौकरानी से भी बदतर प्रयोग करता है ।उन्हें एक मनुष्य का दर्जा भी नहीं देते हैं। विलायत में लड़कियों का यौन शोषण हो रहा है। लेकिन लड़की वालों को इसकी जानकारी नहीं होती है। फिर भी ना जाने सभी विदेशी वर के लिए क्यों लालायित हैं?

आजकल इसका दूसरा रूप हमारे सामने दिखाई देता है। आम आदमी ही नहीं, बड़े–बडे सिनेमा स्टार भी विदेश वर से शादी करके महज 6 महीने के अंतर्गत उनकी असलियत का पता चलने के बाद वापस भारत आकर उसे तलाक कर देते हैं । पढ़ी लिखी, दुनिया से परिचित सिनेमा तारों की यही हाल है तो आम आदमी की स्थिति को क्या कहना? यह विडंबना है कि अपने सच्चे प्यार व प्रेम को दिखाने के लिए भी पैसों की जरूरत होती है । बाप से बड़ा रुपैया यही सर्वव्यापी विचार है।

स्त्री शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा की आवश्यकता : शिवशंकरी अपनी कृति के माध्यम से स्त्री शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर सूक्ष्म रूप से बल देती है। शिक्षा मानव को सुसंस्कृत बनाती है।स्त्री कोअत्याचार पहचानने के लिए, अपने अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए, अपने अस्तित्व कायम रखने के लिए, आत्म बल व मनोबल को बढ़ाने के लिए, शिक्षा शक्तिशाली शस्त्र एवं अस्त्र है।सामाजिक समस्याओंकी मुक्ति के लिए स्त्री शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा अनिवार्य

है। शिक्षा के बल पर हम कुछ भी कर सकते हैं और कुछ भी संभव हो जाती है।

यह खेद की बात है कि आजकल बहुताई महिलाओं का शिक्षण इसीलिए होता है कि उक्त शिक्षा के कारण हमें आर्थिक लाभ मिल जाए। शिक्षा अर्थव्यवस्था का एकमात्र साधनहै।यही कारण है कि आजकल पढ़ी लिखी औरत भी अपनी जीवन रूपी नौका को सही दिशा में चलाने में असमर्थ रहे। क्योंकि उनकी शिक्षा मात्र पैसा कमाने का एक साधनबनगया है। प्राप्त शिक्षा से इस समाज को नवीन दृष्टि में देखने, समझने, परखने और अपनी समस्याओं का समाधान निकालने में वह असमर्थ हैं प्रस्तुत समाज में पढ़ी–लिखी महिलाएं मात्र एक जीती जागती एटीएम कार्ड है।डॉक्टर लूसी इसका सटीक उदाहरण है।

बाहरी दुनिया की जानकारी के लिए, अपने को सक्षम, असमर्थ बनाने के लिए व्यवहारिक शिक्षा की जरूरत है। जीवन मूल्यों को कायम रखने के लिए नैतिक शिक्षा की अहम भूमिका है। तभी समाज में शांति और सुख बरकरार रहेगी। यदि विशाली को बाहरी दुनिया की जानकारी होती, तो उन्हें इतनी सारी यातनाओं को सहने की नौबत नहीं होती। यदि नैतिक मूल्यों की चिंता लेश मात्र भी नायक कुमार में होती, तो इतने सारे नाटक व धोखेबाजी नहीं हुई होती। वह अपने ही बच्चे का काल ना बना होता।

निष्कर्ष के रूप में लेखिका यही कहती है कि "विवाह जो जन्म जन्मांतर का बंधन है, वह विशाली के लिए तो 47 दिनों का बंधन बन गया है। अपने पति के दुर व्यवहार के कारण अपने कोख के बच्चे को डॉक्टर लूसी की सहायता से यहीं 47वांदिन मिटा देती है। अपने पति के साथ इक क्षण भी नहीं रुक कर अपने बड़े भाई चंदू के साथ यही 47वां सत्यवदेश के लिए रवाना हो जाती है।"पृ.सं.200 ("अड्डन कालतु पदिर"47पद्दु इरविल तान")

उपन्यास पढ़कर पाठकों की आंखें नम हो जाती है। कहीं ना कहीं हम विशाली की कुशल वापसी की प्रार्थना अपने आप करने लगते हैं। यह प्रार्थना विशाली के लिए ही नहीं यह दुआ, विशाली के लिए ही नहीं बल्कि सुदूर विदेश में अनेक प्रकार के मानसिक और यौन उत्पीड़नों से जूझने वाली हमारी बेटियों के लिए भी।

सीनिवासन, चेन्नई